P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue- X* June -2016

सुभद्रा कुमारी चौहान एक अद्वितीय व्यक्तित्व

पुष्पा
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग ,
गौरी देवी राज.महिला महाविद्यालय,
अलवर
.

सारांश

सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने जगत में असंख्य पुरूषों व महिलाओं का सृजन कर जगत के विकास को नवीन पथ पर अग्रसर किया। संसार में यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से आंकलन करे तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सृष्टिकर्ता ने सभी के व्यक्तित्व को अमूल्य विशेषताओं से युक्त किया हैं। उनमें से कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो हमारे समाज, मन, मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ अमर हो जाते हैं। यथा – गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा, सावित्री, अहिल्या बाई, रजिया सुल्तान, चाँद बीबी, लक्ष्मी बाई, इन्दिरा गाँधी, कल्पना चावला इत्यादि।

यह अमर विभूतियाँ आज जगत से विलुप्त है, देह नहीं है परन्तु इनका यश कभी न समाप्त होने वाली अमरता का द्योतक है।

मुख्य शब्दः भारतीय,राष्ट्रीयता,सशक्तिकरण,नारी,संघर्ष

प्रस्तावना

महान विभूतियों को कवि, कवयित्री की कविताएँ सदैव जीवन प्रदान करती रहती है। ऐसी ही एक अद्भुत क्षमताओं से युक्त अविस्मरणीय कवयित्री हिन्दी काव्य जगत में सदैव टिमटिमाते हुए तारे के सदृश है। उनका नाम है ''सुभद्रा कुमारी चौहान''। जब हम उनकी कृतियों का अनुशीलन करते हैं तो हमें उनकी विलक्षण, अद्भुत प्रतिभा का दिग्दर्शन होता है।

जयन्ति ते सुकृतिनो रसासिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणंज भयम्।।

(भर्तृहरि, नीति शतक - 25)

उद्देश्य

उपरोक्त पंक्तियों में महाकवि भर्तृहरि ने बताया है कि वह पुण्यवान श्रृद्धा यदि रसों से सिद्ध कवीश्वर विजयी होते हैं जिनकी देहनाश के उपरान्त भी उनकी कृतियों के माध्यम से वह सदा अमर रहते हैं। ऐसी ही अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' हिन्दी के आधुनिक युग में एक अलौकिक दिव्य ज्योति तुल्य है जिनकी प्रतिभा का प्रकाश सदैव सर्वत्र प्रकाशित रहेगा।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 को नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव के सम्पन्न परिवार में हुआ। इनके पिता श्री रामनाथ सिंह शिक्षा प्रेमी व उच्च आदर्श सम्पन्न थे। इनका बचपन प्रयाग तथा शिक्षा भी प्रयाग में ही हुई। बाल्यकाल से ही ये कविताएँ रचने का शौक रखती थी। उनकी रचनाएँ मुख्यतः राष्ट्रीयता की भावना स परिपूर्ण होती थी। 15 वर्ष की आयु में ही इनका विवाह खंड़वा के वकील लक्ष्मण सिंह चौहान से हो गया। विवाह पश्चात् वह जबलपुर आ गई। विवाहपूर्व मात्र नौ वर्ष की आयु में 1913 में सुभद्रा की प्रथम कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में 'सुभद्राकुँवरो' के नाम से प्रकाशित हुई। बचपन से कविता रचने में सुभद्रा 'सिद्धहस्त' थी वह स्कूल से तांगे में आते–जाते ही कविता की रचना कर देती । वह कुशाग्र बुद्धि, चंचल तथा निडर स्वभाव की थी। कक्षा में भी प्रथम आती थी। इन्होंने एक देश प्रेम और जागरूक नारी की तरह जीवन व्यतीत किया। सुभद्रा के व्यक्तित्व में विभिन्न सकारात्मक पक्ष है उनके व्यक्तित्व को हम उनकी कृतियों के माध्यम से जानने व समझने का प्रयास करेंगे क्योंकि किसी भी कवि अथवा कवयित्री का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होता है। अतः हम सुभद्रा की बहुमुखी अलौकिक प्रतिभा को उनके व्यक्तित्व की निम्न विशेषताओं द्वारा जान सकते है यथा

उत्साही व निडर स्वभाव सुभद्रा

कुमारी चौहान ''बीसवीं'' शताब्दी की सर्वाधिक यशस्वी व प्रसिद्ध कवयित्रियों में अग्रणी हैं। उनका यह यश उनकी रचनाओं के कारण फैला।इनकी कविताओं में अद्भुत उत्साह व जाश है जिसे सुनकर मरणासन्न व्यक्ति में भी प्राण संचार हो जाता है। स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई जिसके कारण कई बार यह जेल भी गई।

इन्होंने स्वतंत्रता के लिए निडर होकर अपने विचारों को कविता रूप में मूर्तिमान रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कथनी और करनी में समानता थी। वह जैसा कहती थी उसी प्रकार आचरण करती है। आडम्बर युक्त जीवन से उन्हें परहेज था। अपने उत्साही व निडरता जैसे अद्‌भुत गुण के कारण ही वह भारतीय इतिहास में अजर, अमर हो गई।

स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता

सुभद्रा कुमारी चौहान देश सेविका तथा देशभक्त कवयित्री दोनों रूपों में ही सदा अविस्मरणीय है। वह राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण थी। अतः उनकी कृतियों में भी राष्ट्रीयता की भावना मुखरित होती हे यथा –

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी
गुमी हुई आज़ादी की, कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगो को करने की, सबने मन में ठानी थी।
(सुभद्रा कुमारी चौहानी, झांसी की रानी)

उनकी उपरोक्त झाँसी की रानी की कविता में देशभक्ति और उद्‌बोधन का अद्वितीय रूप मिलता है। इसी प्रकार ''वीरा का कैसा हो वसंत'' कविता में भी देश प्रेम की भावना अनुस्यूत है यथा

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके, तुझसे क्यों लगी आग
ऐ कुरूक्षेत्र ! अब जाग ! अब जाग ! जाग !
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसन्त

भारतीयों को ऐसी कविताएँ अपने देश के लिए बलिदान व समर्पण के लिए अग्रसर कर राष्ट्र सुरक्षा के हौसलों को बुलन्द करती है। इसी प्रकार इनकी तृतीय कविता ''जलियाँ वाले बाग में बसंत'' में उन्होंने सीधा हृदय पर प्रहार करने वाले राष्ट्रों में कहा ह।

परिमलहीन पराग दाग सा बन पड़ा है
हा । यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज। किंतु धीरे से आना
यह है शोक स्थान यहां मत शोर मचाना
कोमल बालक मेरे यहां गोली खा–खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर
(सुभद्रा कुमारी चौहान, जलियाँ वाले बाग का बसंत)

सन् 1920–21 में सुभद्रा और लक्ष्मण सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे। उनहोंने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया और घर–घर में कांग्रेस का संदेश पहुंचाया। 1922 में जबलपुर का ''झंड़ा सत्याग्रह'' देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी देश की प्रथम सत्याग्रही महिला थी। सभाओं में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करती थी। लोग अत्याधिक प्रभावित होते थे। 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के संवाददाता ने अपनीएक रिपोर्ट में उनका उल्लेख 'लोकल सरोजनी' कहकर किया। वे अत्यन्त ही सहजता से देश की पहली सत्याग्रही बनकर कई बार जेल भी गई। लक्ष्मण सिंह चौहान जैसा जीवनसाथी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसा पथ प्रदर्शक पाकर वह स्वतंत्रता संग्राम में अनवरत रूप से सक्रिय रही। काफी समय तक वह मध्य प्रांत अंसेबली की कांग्रेस सदस्या रही। साहित्य और राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक साहसी, जागरूक, आदर्श नारी के रूप में अपने कतव्यों का वहन करती रही। सन् 1920 में जब सभी तरफ गाँधी जी के नेतृत्व की चर्चा थी उसी समय दोनों पति–पत्नि स्वतंत्रता आन्दोलनों में महत्वपूर्ण कार्यशैली व कविताओं के माध्यम से आजादी की लड़ाई में संघर्षशील रहे। उनकी कविताएँ आजादी की आग में घी की आहूतियों का कार्य कर रही थी।

बहुमुखी स्वभाव

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म एक भारतीय सम्पन्न परिवार में होने से उनका चरित्र आदर्शों के उच्चतम शिखर का स्पर्श करता था। वह बचपन से कक्षा में प्रथम आती थी तो तीक्ष्ण बुद्धि, नीडर, साहसी, उत्साही, सहज स्वभाव वाली थी। सुभद्रा और हिन्दी की महत्वपूर्ण कवयित्री महादेवी वर्मा दोनों बालपन की सहेलियाँ थी। दोनों ने ही एक दूसरे की प्रसिद्धि में सुखानुभूति की। सुभद्रा की पढ़ाई नौवी कक्षा के बाद छूट गई। दोनों सखियाँ वैसे अलग हो गई परन्तु मन से सदैव एक दूसरे के हित चिंतन में ही संतुष्ट होती थी।

बचपन से ही 'दबंग' प्रवृति भी थी। वह गलत, अनैतिकता को स्वीकारने की पक्षपाती नहीं थी। गलत के प्रति अपनी आवाज को उठाकर विरोध करने का हौसला उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष था। ऐसी दबंग, बहादुर व विद्रोही प्रवृति के कारण ही वह अशिक्षा, अंधविश्वास, जातिप्रथा, रूढ़िवादिता इत्यादि भीषण बुराईयों को समाज से दूर करने के लिए वह निडर होकर लड़ी। वह सच्चे अर्थों में 'देशप्रेमी' थी। राष्ट्रहित उनके लिए सर्वोपरि था। देश के लिए कर्तव्य और समाज की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ को तिलांजलि दे दी।

राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषा प्रेम

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की एक सजग व सशक्त कवयित्री रही है। 'वीरों का कैसा हो वसन्त' कविता में उनकी राष्ट्रीय प्रेम की अभिव्यक्ति होती है। कविता की शब्द रचना, लय और भाव–गर्भिता अकल्पनीय है। इसी प्रकार उनकी रचित कविता 'राखी' भी देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है। यथा –

लो आओ भुजदण्ड़ उठाओ
इस राखी में बँध जाओ
भारत भूमि की रजो भूमि को
एक बार फिर दिखलाओ
वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान
पढ़ते–पढ़ते आंखों में छा
जाता राखी का आख्यान
(सु.कु.चौ. राखी कविता)

इसी प्रकार उनके राष्ट्र प्रेम को अभिव्यक्त करती अन्य भी कविताएँ दृष्टिगोचर है यथा – स्वदेश के प्रति, विजयादशमी,विदाई,जलियाँ वाले बाग में बसन्त इत्यादि। मातृभूमि के प्रति श्रृद्धा व आदर के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा के भी प्रति उनका गहरा सरोकार है जिसकी अभिव्यक्ति उनके द्वारा रचित 'मातृ मन्दिर' नामक कविता में दृष्टिगोचर होती है। निम्न पंक्तियों में उनकी राष्ट्रभाषा पति चिन्ता इंगित होती है यथा–

''उस हिन्दू जन की गरविनी
हिन्दी प्यारी हिन्दी का
प्यारे भारतवर्ष कृष्ण की
उस प्यारी कालिन्दी का
है उसका ही समारोह यह
उसका ही उत्सव प्यारा
मैं आश्चर्य भरी आंखों से
देख रही हूं यह सारा
जिस प्रकार कंगाल बालिका
अपनी माँ धनहीता को
टुकड़ों की मोहताज तक
दुखिनी की उस दीना को
(सु.कु. चौहान, 'मातृ मन्दिर')

नारी सशक्तिकरण का आधार

सुभद्रा कुमारी चौहान भारत में नारी को पुरूष के बराबर स्वीकार करती थी। हजारों स्त्रियों की वह प्रेरणास्त्रोत थी। वह नारी दमन, नारी शोषण, अत्याचार, असमानता, नारी हिंसा के विरूद्ध अपनी भावनाओं को कविताओं के रूप में मुखरित किया है। नारी को इस भावना से मुक्त किया है कि यदि पुरूष स्वतंत्रता संग्राम में कायर बने तो स्त्री को बुलंद होकर देश को स्वतंत्र कराने के लिए सदैव तत्पर रहना होगा यथा

सबल पुरूष यदि भीरू बने, तो हमको दे वरदान राखी।
अबलाएँ उठ पडें देश में, करे युद्ध घमासान सखी।।
पंद्रह कोटि अहसयोगिनियाँ, दहला दे ब्रहमाण्ड राखी।
भारत लक्ष्मी लौटाने को, रच दे लंका काण्ड सखी।।

वीरप्रभु भारत भूमि की क्षत्राणि की युद्ध गाथा को सुभद्रा जी ने अमर कर दिया। देश के राष्ट्रीय आन्दोलनों में स्त्रियों को प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ

''बुंदेलो हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।''
(कविता झाँसी वाली रानी)

यह पंक्तियाँ तब भी और आज भी सभी युवतियों को कण्ठस्थ है। बुन्देलखण्ड की लोकशैली में गाये जाने वाले छंद में प्रस्तुत यह 'झाँसी की रानी' कविता हिन्दी भाषी प्रान्तों में नारा बन गई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में ही रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती है। बहन, माता– पत्नी, बेटी के साथ–साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव सुभद्रा ने व्यक्त किये हैं। उनकी शैली में वही अकृत्रिमता, सरलता, सहजता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है।उनमें एक ओर जहाँ नारी सुलभ गुणों का उत्कर्ष हे, वहीं स्वदेश प्रेम और देशाभिमान भी है जो एक क्षत्रिय नारी में होना चाहिये।

जबलपुर की आम सभाओं मं स्त्रियाँ उनके भाषण को सुनने बहुत बड़े समुदाय में जुटती थी। वह स्त्रियों के लिए अभिशाप स्वस्थ प्रथाओं के निराकरण के लिए लगातार संघर्षशील रहती थी जैसे – पर्दे का विरोध, अन्धविश्वास व रूढ़ियों का विरोध, भेदभाव, छुआछूत का विरोध तथा स्त्री शिक्षा की पक्षपात थी। उनमें भारतीय नारी की शील व मर्यादा जैसे तत्व भरपूर थे। जिसके कारण स्त्रियाँ उन पर विश्वास करती थी। विचारों की दृढ़ता के साथ–साथ उनके स्वभाव व व्यवहार में एक लचीलापन भी था जिसके कारण वह सबके मन में अपनी ओर केन्द्रित करने का सामर्थ भी रखती थी।

वसुधैव कुटुम्बकम् से ओतप्रोत

सुभद्रा कुमारी चौहान का सम्पूर्ण जीवन केवल अपने लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए समर्पित था। उनके जीवन में सम्पूर्ण वसुधा ही मेरा परिवार है ऐसी भावना सदैव विद्यमान रही है। उन्होंने अपने निजी स्वार्थ व सुखों को महत्व न देते हुए समग्र भारतवासियों के हितार्थ स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी की।

सादा जीवन उच्च विचार

भारतीय संस्कृति में अविस्मरणीय नाम 'महात्मा गाँधी' का नारा 'सादा जीवन उच्च विचार' को अपने जीवन में चरितार्थ करने का संकल्प सुभद्रा कुमारी चाहान ने लिया था।वह भारतीय आदर्श नारी की प्रतिभूति थी जिनका जीवन त्याग व सादगी सम्पन्न था। त्याग और सादगी की यह प्रतिकृति सफेद खादी की बिना किनारें वाली धोती पहनती थी। उन्हें सादी वेशभूषा में देखकर बापू जी ने उनसे पूछा, ''बेन! तुम्हारा विवाह हो गया है'' क्योंकि गहनों और कपड़ों का विशेष शाक होते हुए भी वह चूड़ी और बिंदी का प्रयोग नहीं करती थी। इसीलिए बापू जी के प्रश्न पूछने पर सुभद्रा जी बोली 'हाँ' तब बापू जी कुछ हैरान और कुछ आश्वस्त भी हुए और बोले ''जाओ, कल किनारे वाली साड़ी, चूड़ी पहनकर सिन्दूर लगाकर आना।''

सुभद्रा जी की सादगी, सहज स्नेही मन और निश्छल स्वभाव सबको प्रभावित करता था। उनका जीवन प्रेमयुक्त था निरन्तर निर्मल प्यार बाँटकर भी खाली नहीं होता था। ऐसे ही अनेकों दृष्टान्त मिलते हैं जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि सुभद्रा जी सादगी पूर्ण जीवन में भी चमत्कारिक परिवर्तन किये उनमें प्रतिभागिता की बिना किसी स्वार्थ या मिथ्या आडम्बर के वह सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रही।

प्रेम के विविध रूपों की अभिव्यक्ति

सुभद्रा कुमारी चौहान एक सफल, सशक्त, उत्साही, निडर, संघर्षशील होते हुए भी एक नारी में विद्यमान कोमलता, सुकुमारता व ममता की दिव्य ज्योति थी।उनके काव्यों में प्रेम की विभिन्न स्तरों पर अलग–अलग रूपों में अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से झलकती है यथा :– 'बचपन से प्रेम' नामक कविता में सुभद्रा जी ने निर्दोष और चंचल, अल्हड़ बचपन की स्मृति में संजोकर मधुरता व सजीवता से अभिव्यक्त किया है। ऐसी कविताएँ सदैव नूतन रहती है क्योंकि सभी को अपने बचपन की मधुर व कटु स्मृतियाँ सदैव याद रहती है। ऐसी कविताओं के माध्यम से वह बचपन पुनः हमारी आँखों के सामने आ जाता है। नवीन रूप में यथा–

''बार–बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी,
आ जा बचपन, एक बार फिर
दे दो अपनी निर्मल शान्ति
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्रकृति विश्रांति।

सुभद्रा कुमारी के अनुसार प्रेम के बिना जीवन अधूरा है। प्रेम जीवन मे महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है।

शैशवास्था में बचपन से प्रेम विवाह के उपरान्त दाम्पत्य प्रेम इसके अतिरिक्त प्रकृति प्रेम, मानवप्रेम भी जीवन के अनिवार्य अंग है।दाम्पत्य प्रेम की कविताओं में जीवनसाथी के प्रति अटूट विश्वास, प्रेम, निष्ठा और रागात्मकता के दर्शन होते हैं यथा – ''प्रियतम से, चिन्ता, मनुहार राधे, आहत की अभिलाषा, प्रेम श्रृंखला, अपराधी है कौन, दण्ड का भागी बनता कौन इत्यादि उनकी बहुत ही ह्दयावर्जक कविताएँ हैं। दाम्पत्य की रूकने और मनुहार करती ''प्रियतम से'' कविता का अंश दृष्टिगोचर है यथा

''जरा – जरा सी बातो पर
मत रूठो मेरे अभिमानी
लो प्रसन्न हो जाओ
गलती मैन अपनी सब मानी'' – 1

दाम्पत्य की विषम, वितुल और गोपनीय स्थितियों की जिस तरह से अभिव्यक्ति सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं में की है वह अत्यन्त ही मार्मिक है –

''यह मर्म कथा अपनी ही है।
औरों की नहीं सुनाऊँगी''

प्रभु की ओर अपना भक्तिभाव अतुलनीय हैं। सुभद्रा जी का भक्ति–भाव भी अत्यन्त ही प्रबल है। पूर्ण मन से प्रभु के सम्मुख अभिव्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है यथा – उनकी रचना ''ठुकरा दो या प्यार करो'' में यह भाव व्यक्त होता है यथा

''देव। तुम्हारे कई उपासक
कई ढंग से आते बहुमूल्य भेंट''

इसी प्रकार वैदिक काल पर दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि सृष्टि आदिकाल से मनुष्यों की सहचरी रही है। कवि कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में शकन्तला की विदाई पर सारी प्रकृति संवेदनशील हो गई। वृक्ष जी मानो पत्ते गिराकर उसकी विदाई पर शोक प्रकट कर रहे थे, कोई वृक्ष सफेद रेशमी वस्त्र, कोई वृक्ष लाक्षारस उपहार स्वरूप शकुन्तला को भेंट कर रहे थे। इसी प्रकार कालिदास की ही भांति सुभद्रा कुमारी चौहान भी प्रकृति के प्रति विशेष अनुराग रखती थी। सुभद्रा कुमारी का यह प्रकृतिप्रेम उनकी कृतियों में स्पष्टतः झलकता है यथा – नीम, फूल के प्रति, मुरझाया फूल इत्यादि में प्रकृति के साथ मनुष्य का साक्षात सम्बन्ध दर्शाया है जो सटीक भी है।

प्रेम का अन्य रूप माँ की ममता का भी असीमित भण्डार सुभद्रा जी की कविताओं में झलकता है। वह माँ की अनकरणीय शिक्षा का सागर तथा बच्चों में संस्कार व मूल्यों को स्थापित करने का सशक्त माध्यम होती है। माँ की इस ममता मयी दिव्य छवि को कवयित्री प्रस्तुत करती है यथा

कोयल यह मिठास क्या तुमने अपनी माँ से पाई है ?
माँ ने ही क्या तुमको मीठी बोली सिखलाई है।
हम माँ के बच्चे हैं, अम्मा हमें बहुत प्यारी है।
उसी तरह क्या अम्मा कोयल तुम्हारी है ?

सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में प्रेम के विविध पक्षों को सफलतापूर्वक यथार्थ रूप म चित्रित किया है। कवयित्री ने प्रेम के अलग–अलग रूप प्रेमी–प्रेमिका का प्रेम, अराध्य व अराधक का प्रेम, माँ का बच्चों के प्रति व बच्ची का अपनी माँ के प्रति प्रेम, पति–पत्नी का एक दूसरे के लिए परस्पर प्रेम तथा प्रकृति के प्रत्येक जीव के साथ भावुकता व तारतम्यता का प्रेम भाव इत्यादि विविध आयामों में अपने काव्यों में स्थान दिया है और प्रत्येक पक्ष की व्याख्या करते समय उसके साथ पूरी तरह न्याय भी किया है।

सुभद्रा जी का पुत्री प्रेम

भारतीय समाज में स्त्री और पुरूष दोनों का समान महत्व होना चाहिये परन्तु भारत एक पुरूष प्रधान देश है। जहाँ पुरूष का वर्चस्व ही प्रायः अधिक रहा है। आज वर्तमान में 'कन्या भ्रूण हत्या' जैसे घृणित कुकृत्यों को निवारणार्थ बिटिया की घर व समाज में उपयोगिता को समझना अत्यन्त ही अनिवार्य हो गया है। आज हमारे नैतिक पतन के कारण हैं ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसे सजीव वचनों को हम भूलकर बिटिया का दुनिया में आने से ही रोक देते हैं, उसकी हत्या कर देते हैं। ऐसे अवसर पर सुभद्रा जी की कविताएँ निर्जीव नैतिकता म प्राणों का संचार करती है और उसे पुनर्जीवित कर देती है यथा

''मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठो बिटिया मेरी
नंदनवन से फूल उठी
यह छोटी से कुटिया मेरी।''

(सुभद्रा कुमारी चौहान, मेरा नया बचपन कविता)

'अगले जन्म मोहे बिटिया ही कीजो' को चरितार्थ करती हुई सुभद्रा जी बेटी के महत्व को प्रतिपादित करती है यथा

''दीपशिखा है अंधकार की
घनी घटा है उजियाली
ऊषा है यह कमल–भृंग की
है पतझड़ की हरियाली।'

(सु.कु.चौ., बालिका परिचय कविता)

सुभद्रा जी के बारे में ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने अपनी पुत्री का कन्यादान करने से इंकार कर दिया था उनके अनुसार कन्या कोई वस्तु नहीं है जिसका दान किया जाए। स्त्री स्वतंत्रता व समानता की महत्वपूर्ण सोच थी। उन्होंने स्त्री को समाज मे पुरूष के बराबर स्थान दिलाने का साहस व प्रयास किया जो उनकी बहादुरी व निडरता का परिचायक भी है।

समाज से विषमताओं को मिटाने का प्रयास

समाज में व्याप्त अमीर–गरीबी, छुआछूत, साम्प्रदायिकता, धर्मा में आपसी मनमुटाव इत्यादि बुराईयों को दूर करने का भी भरसक प्रयास उनकी रचनाओं में मिलता हे। वह समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर कर समानता के धरातल पर सबको स्थापित करने की इच्छा रखती थी।

''मैं अछूत हूँ मंदिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है।
किंतु देवता यह न समझना, तुम पर मेरा प्यार नहीं है।।''

(सुभद्रा कुमारी चौहान)

सुभद्रा कुमारी चौहान एक वीर, साहसी, उत्साही, महत्वाकांक्षी, संघर्षशील, राष्ट्रीय चेतना से भरपूर अविस्मरणीय कवयित्री रहेंगी। उनका जीवन आदर्शों से भरपूर, प्रेरणादायक जोश तथा उन्माद सृजित करने वाला था।

इतनी यशस्वी विभूति का जीवन बहुत ही छोटा रहा। 15 फरवरी, 1948 को कार दुर्घटना में उन्होंने अपनी

देह को त्याग दिया परन्तु ''झांसी की रानी' जैसी अद्वितीय कृति के कारण वे सदैव अजर अमर रहेंगी। उनकी कृतियों के कारण उन्हें अनेकों पुरस्कारों से नवाजा गया, उनके नाम का डाक टिकट जारी किया गया, तटरक्षक जहाज को उनके नाम से जाना गया। महादेवी वर्मा जी जो सुभद्रा जी की सहेली थी उनके शब्दों में हम सुभद्रा जी के संदेशों को दूर–दूर तक फैलाएँ यही उनके लिए श्रद्धांजलि होगी।''

सुभद्रा जी जैसा व्यक्तित्व धरती पर दूसरा होना असम्भव है। अतः अपनी विशेषताओं के कारण ही वह ''अद्वितीय व्यक्तित्व की धनी'' रूप में जानी पहचानी जाती है और सदैव ही रहेंगी।

उपसंहार

हिन्दी के आधुनिक युग में अद्वितीय अलौकिक, उत्साही व निडर व्यक्तित्व की धनी, देश प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत, नैतिकता, चरित्र के उच्च आदर्शो की अनुगामी इत्यादि अनेकों विशेषताओं से युक्त सुभद्रा कुमारी चौहान अलौकिक नारी थी। उनकी कविताओं में केवल मात्र ओजस्वी स्वरूप का ही दिग्दर्शन नहीं होता बल्कि उन्होंने प्रेम के कोमल विविध पक्षों की भी अभिव्यक्ति अपनी कविताओं में की है। 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्त को जीवन में प्रतिबिम्बित करने वाली सुभद्रा जी वास्तव में 'नारी सशक्तिोकरण' की प्रबल पोषिका भी थी। नारी शक्ति रूप है। उनके अस्तित्व को समाज कभी भी नकार नहीं सकता। नारी माँ, पुत्री, बहन, प्रिया, विविध रूपों में अपनी ममता व प्यार की गोद में पुरूष का विकास करती हुई उसे समाज का योग्य नागरिक बनाती है। सुभद्रा कुमारी चौहान समाज में व्याप्त ऊँच–नीच, गरीबी–अमीरी, जाति–पांति की प्रबल विरोधी तथा सभी मनुष्यों को समान मानतो हुई 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ओतप्रोत थी।

संक्षेप में सुभद्रा कुमारी चौहान बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व का दृष्टान्त सदैव ही प्रस्तुत करती रहेंगी। देशप्रेम, मातृभाषा, राष्ट्रीयता की पक्षपाती, निडर, साहसी, वीर, कुशल गहणी, उत्साही कवयित्री, सूरज और चाँद के समान जब तक ब्रह्माण्ड रहेगा तब तक उनकी ख्याति सदैव ही चमकती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुभद्रा कुमारी चौहान और राष्ट्रीय चेतना, चम्पा सिंह।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रन्थावली (भाग–2), रूपा गुप्ता।
3. हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार, सत्तार भाई एस. बहोरा, सार्थ पब्लिकेशन, आनंद।
4. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डां. मुरलीलाल शर्मा 'सरस' जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली।
5. ग्रेट वूमेन ऑफ इण्डिया, दक्षिण कनाड़ा फेलेटेलिक एण्ड न्यू मिसमेटिक एसोसियेशन।
6. झाँसी की रानी – सुभद्रा कुमारी चौहान, हिन्दी कुंज 17 मार्च, 2011
7. सुभद्रा कुमारी चौहान काव्यांचल, 17 मार्ग, 2011
8. सुभद्रा कुमारी चौहान, स्वराज संस्थान, 16 मार्च, 2011
9. सुभद्रा कुमारी चौहान, डॉ. प्रतीक मिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
10. सुभद्रा कुमारी चौहान,सुधा चौहान,साहित्य अकादमी, 2012
11. मिला तेज से तेज, सुधा चौहान, हंस प्रकाशन, 18 न्याय मार्ग, इलाहाबाद।
12. पथ के साथी,महादेवी वर्मा,राधा कृष्णन, नई दिल्ली, 1956